SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2020-22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Unit-4 (Classroom Processes and Learning Plan Part – II

DATE - 07 07/2021

Communiction Skills of Teacher
(शिक्षक का सम्प्रेषण कौशल)

सम्प्रेषण :- सूचना तथा विचारों का आदान प्रदान करना सम्प्रेषण कहलाता है।

⇒ शिक्षण के लिए काफी आवश्यक तत्व है।

⇒ सम्प्रेषण के बिना शिक्षण कार्य संभव नहीं है।

⇒ बिना सम्प्रेषण के अधिगम एवं शिक्षण सम्भव नहीं हो सकता है।

⇒ सम्प्रेषण दो शब्दों के मेल से बना है सम+प्रेषण अर्थात समान रूप से भेजा गया।

⇒ कम्युनिकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कम्युनिस शब्द से हुई है।

ई. जी. मेयर के अनुसार सम्प्रेषण की परिभाषा :-

"सम्प्रेषण से तात्पर्य एक व्यक्ति के विचारों तथा शक्तियों से दूसरे व्यक्तियों को परिचित कराने से है।"

लुइस ए. एलन के अनुसार सम्प्रेषण की परिभाषा :-
"सम्प्रेषण अर्थों का एक पुल है जिसमें कहने सुनने तथा समझने की व्यवस्थित तथा सतत प्रक्रिया रहती है।"

कौशल (Skills) :-
किसी भी कार्य में कुशल होने, दक्ष होने एवं सहज होने की अवस्था है।

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31									

सम्प्रेषण कौशल

सम्प्रेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने हाव-भाव, मुख-मुद्रा तथा विचारों आदि का परस्पर आदान प्रदान करते हैं तथा इस प्रकार से प्राप्त विचारों तथा सन्देशों को समान तथा सही अर्थों में समझने और प्रेषण करने में उपयोग करते हैं।

कक्षा-कक्ष में शिक्षण की सारी प्रक्रिया विभिन्न प्रकार के ज्ञान, बोध एवं समझ विकसित करने के लिये की जाती है। शिक्षण प्रणाली में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही सक्रिय रहकर अन्तःप्रक्रिया करते हैं। इस प्रक्रिया में संचार माध्यमों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार सम्प्रेषण शिक्षा की रीढ़ है।

1. शिक्षक का भाषा कौशल :- सम्प्रेषण प्रक्रिया में विचारों व भावनाओं का आदान-प्रदान तथा व्यक्तियों के मध्य अन्तःप्रक्रिया, पृष्ठ-पोषण तथा सम्प्रेषण द्वारा स्पष्टीकरण को भाषा ही सुलभ बनाती है। सम्प्रेषण प्रक्रिया में भाषा तब ही प्रभावी भूमिका निभा सकती है जब संदेश-प्रेषक तथा संदेश ग्रहण कर्ता दोनों ही संचार में प्रयुक्त भाषा को जानते और समझते हैं।

2. शिक्षक-श्रवण कौशल :

यह स्वयं सिद्ध है कि अच्छे श्रोता ही अच्छे सम्प्रेषक होते हैं। सुनने का अवधान से गहरा सम्बन्ध है। इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक को भी अच्छा श्रोता होना चाहिए। वह छात्रों की बातों को सही व शुद्ध रूप से सुनें तभी तो वह छात्रों की बातों के प्रति समुचित प्रतिक्रिया कर सकेगा। अतः अध्यापक में सुनने का कौशल व दक्षता होनी चाहिए तथा उसे छात्रों में भी सुनने का कौशल व दक्षता का विकास करना चाहिये।

3. शिक्षक का ध्यानाकर्षण कौशल :-

सम्प्रेषण का मुख्य ध्येय दूसरे पक्ष को अपने विचार समझा देना है, केवल व्यक्त कर देना ही नहीं। यह तभी सम्भव होगा, जबकि सन्देश प्रापक उसमें रुचि लें।

4. पर्याप्तता का कौशल :-

इसका आशय है कि सूचनाएँ पर्याप्त होनी चाहिये, अपूर्ण नहीं। अपूर्ण सूचनाओं का प्रभाव तो सूचनाएँ न देने से भी अधिक खतरनाक होता है

5. शिष्टता एवं शालीनता कौशल :-

सम्प्रेषण में सूचनाएँ शिष्ट एवं शालीन होनी चाहिए। उन्हें सम्प्रेषण करते समय शिष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिससे सुनने वाला व्यक्ति सूचना को ध्यान से सुने तथा उससे प्रभावित हो

6. संगतता का कौशल :-

सम्प्रेषण करते समय इस सिद्धान्त का पालन करना चाहिए कि सूचनाएँ संगत हों अर्थात् वे परस्पर विरोधी न हों। सूचनाएँ उपक्रम की नीतियों योजनाओं तथा उद्देश्यों के अनुरूप ही होनी चाहिये

7. अनौपचारिकता का कौशल :-

सम्प्रेषण की प्रभावी प्रक्रिया के लिये यह आवश्यक है कि संगठन में अनौपचारिक सम्बन्धों का भी विकास किया जाये। कभी-कभी संगठन में अनौपचारिक सम्प्रेषण की प्रक्रिया भी अधिक प्रभावी होती है।

सम्प्रेषण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक

1. छात्र :- वर्तमान में शिक्षण बाल-केन्द्रित है जिसमें छात्र प्रमुख है। अतः छात्रों की आयु, मूल आकांक्षाएँ बौद्धिक स्तर, मनोभावनाएँ शिक्षण सम्प्रेषण को प्रभावित करते हैं।

2. शिक्षक का व्यक्तित्व :- शिक्षण - सम्प्रेषण में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक का छात्रों के प्रति व्यवहार, उसका विषय पर स्वामित्व, निष्पक्षता, चरित्र, उसकी योग्यता आदि की छाप बालक पर पड़ती है।

3. शिक्षण के उद्देश्य की जानकारी :- शिक्षक को शिक्षण एवं विषय से सम्बन्धित शिक्षण के उद्देश्यों की जानकारी होनी चाहिए ताकि अपेक्षित शिक्षक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वह पर्याप्त साधन एवं सुविधाएँ जुटा सके।

4. विषय वस्तु का चयन :- शिक्षार्थियों के लिये विषय वस्तु सरल, पठनीय एवं क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत होनी चाहिए। उससे सीखने का वातावरण सृजित होता है तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

5. उचित शिक्षण विधि एवं सहायक सामग्री का प्रयोग :- शिक्षक को सदैव विषय प्रकरण एवं कक्षा स्तर के अनुकूल शिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिये। शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए उचित

सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिये।

6. वैयक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान :- शिक्षण सम्प्रेषण के दौरान शिक्षक को शिक्षार्थी की व्यक्तिगत विभिन्नताओं, जैसे — बुद्धि-स्तर, अभिवृत्ति, रुचि, रुझान, आदत एवं आकांक्षाओं आदि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिये।

7. कक्षा का वातावरण :- सम्प्रेषण क्रिया के दौरान कक्षा का वातावरण भौतिक एवं सामाजिक रूप से व्यवस्थित होना चाहिये। कक्षा में उचित प्रकाश, वायु, ऊष्मा एवं सर्दी की उचित व्यवस्था तथा शिक्षार्थियों में पारस्परिक मैत्री भाव होना चाहिये।

8. पाठ्य योजना का निर्माण :- पाठ्य योजना में शिक्षण सम्प्रेषण के उद्देश्य समाहित होते हैं अतः प्रभावकारी शिक्षण के लिये शिक्षण सम्प्रेषण में सुव्यवस्थित पाठ्य-योजना का निर्माण कर लेना चाहिये।

अधिगमकर्ता (शिक्षार्थियों) की भूमिका

किसी भी प्रकार के अधिगम कार्य में अधिगमकर्ता की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रहती है। जो कुछ भी उसे सीखना है तथा जो भी अपेक्षित परिवर्तन व्यवहार में आने हैं उसका मुख्य नायक विद्यार्थी ही होता है। अतः किसी अधिगम परिस्थिति में विद्यार्थी कितना कुछ सीख सकेगा, यह उसकी अपनी मूल प्रकृति, अर्जित अनुभव तथा योग्यताओं तथा सीखने में उसके द्वारा किये जाने वाले प्रयत्नों पर ही निर्भर करेगा। विद्यार्थी से सम्बन्धित ऐसे सभी कारकों को जो अधिगम की प्रक्रिया और परिणाम दोनों को ही प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, निम्नप्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है —

1. अधिगमकर्ता का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य :-

शिक्षार्थियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर किसी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सफलता बहुत कुछ हद तक निर्भर करती है। विशेषकर पढ़ने-पढ़ाने के समय जैसी भी शारीरिक और मानसिक स्थिति विद्यार्थी की होती है, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया उसी रूप में आगे बढ़ती है।

2. विद्यार्थी की मूलभूत क्षमता तथा योग्यता :-

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और परिणाम दोनों ही उस बात से पूरी तरह प्रभावित होती हैं कि सीखने वाले की मूलभूत क्षमताओं तथा योग्यताओं की प्रकृति और स्तर किस प्रकार का है जिनके बलबूते पर वह सीखने की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है।

3. महत्वाकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर :-

अधिगमकर्ता की महत्वाकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर पर भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सफलता काफी सीमा तक निर्भर करती है। अगर किसी विद्यार्थी में किसी भी प्रकार से आगे बढ़ने तथा जिनमें कुछ न बन सकने या उपलब्ध करने की कोई महत्वाकांक्षा या अभिप्रेरणा ही नहीं है तो वह फिर क्यों किसी बात को सीखने की कोशिश करेगा। जो जितना जिस रूप में पाने की इच्छा करता है वह उसी रूप में उसके लिए प्रयत्न भी करना चाहेगा।

4. जीवन उद्देश्य :- अधिगमकर्ता (शिक्षार्थी) का जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण है तथा वह अपने जीवन में किन लक्ष्यों की प्राप्ति को किस रूप में स्थान देता है, इस बात पर भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उसकी रुचि और प्रगति निर्भर करती है। जीवन के यही दृष्टिकोण उसे किसी विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा क्षेत्र विशेष के ज्ञान प्राप्ति की ओर मोड़ सकता है अथवा उससे दूर ले जा सकता है।

5. तत्परता एवं इच्छा शक्ति :- सीखने वाला किस सीमा तक किस रूप में कोई बात सीखने को इच्छुक या तत्पर है तथा उसमें सीखने के लिये कितनी इच्छाशक्ति है इस बात पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सफलता बहुत हद तक निर्भर करती है। अगर कोई सीखने के लिये तैयार ही नहीं है तो फिर सीखने या सीखाने के कार्य में सफलता की बात सोचना ही बेकार है। हाँ, अगर कोई सीखने को उत्सुक है तथा उसमें हर हाल में सीखने के रास्ते पर चलते रहने की दृढ़ इच्छा-शक्ति है तो फिर कोई भी बाधा उसे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उचित सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकती।